theprogressjournals.com

2025 TPJ| VOLUME 3, ISSUE 3
July - September | ISSN – 2584 - 0517

Indexing: *ABCD, Listed in ROAD — ISSN International Centre*
TPJ-14799, (pp - 33-41)
DOI: 10.61463/tpj-vol-3-issue-3-102

1857 ई० के सैन्य विद्रोह का वर्तमान समय में आमजनों का दृष्टिकोण : एक चर्चा

रचना कुमारी
शोधार्थी, इतिहास विभाग
सोनादेवी विश्वविद्यालय, घाटशिला, जमशेदपुर

शोध–सार

1857 का सैन्य विद्रोह, जिसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम भी कहा जाता है, भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। यह विद्रोह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के खिलाफ एक व्यापक और संगठित प्रतिरोध था। उस समय, इसे मुख्य रूप से एक सैनिक विद्रोह के रूप में देखा गया था, लेकिन समय के साथ इसकी व्याख्या में बदलाव आया है। आज के समय में, आम लोगों की दृष्टि से यह केवल एक सैन्य विद्रोह नहीं, बल्कि भारतीय राष्ट्रवाद की भावना का उदय और सामूहिक एकता का प्रतीक बन गया है। इस विद्रोह को वर्तमान में विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा जाता है, जिसमें इसे हिंदू-मुस्लिम एकता का एक आदर्श उदाहरण और सामाजिक-आर्थिक शोषण के खिलाफ एक जन-आंदोलन के रूप में समझना शामिल है। हालाँकि, कुछ लोग इसे केवल एक असफल विद्रोह मानते हैं, लेकिन अधिकांश लोग इसे ब्रिटिश शासन की नींव हिलाने वाली एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में देखते हैं जिसने भविष्य के स्वतंत्रता संग्राम की रूपरेखा तैयार की।

मुख्यबिन्दु-*1857 का विद्रोह, स्वतंत्रता संग्राम, भारतीय राष्ट्रवाद, ब्रिटिश राज, मेरठ विद्रोह, सामाजिक-आर्थिक शोषण, सामूहिक एकता, ऐतिहासिक दृष्टिकोण, जन-आंदोलन, हिंदू-मुस्लिम एकता।*

परिचय

1857 का सैन्य विद्रोह, जिसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम या सिपाही विद्रोह के रूप में भी जाना जाता है, भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह विद्रोह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ भारतीय सैनिकों और नागरिकों द्वारा किया गया एक सशस्त्र विद्रोह था, जिसकी शुरुआत 10 मई 1857 को मेरठ में हुई थी। इस विद्रोह के कारण और परिणामों ने भारतीय समाज, संस्कृति और राजनीति पर गहरा प्रभाव डाला। वर्तमान समय में, आम लोगों के दृष्टिकोण से इस विद्रोह को विभिन्न कोणों से देखा जाता है।[1] यह चर्चा 1857 के विद्रोह के प्रति आधुनिक भारतीय समाज की धारणाओं, इसके ऐतिहासिक महत्व और समकालीन प्रासंगिकता पर केंद्रित है। 1857 का विद्रोह केवल एक सैन्य विद्रोह नहीं था, बल्कि यह ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ व्यापक असंतोष का प्रतीक था। विद्रोह के कारणों में सैनिकों के बीच धार्मिक और सांस्कृतिक अपमान (जैसे, चर्बी वाले कारतूसों का मुद्दा), आर्थिक शोषण, सामाजिक भेदभाव और स्थानीय शासकों की शक्ति का ह्रास शामिल थे। इस विद्रोह में नाना साहब, रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, मंगल पांडे और बहादुर शाह जफर जैसे नेताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालांकि यह विद्रोह अंततः असफल रहा, लेकिन इसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नींव रखी और ब्रिटिश शासन को चुनौती दी। 1858 में, इसके परिणामस्वरूप ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त

"© 2025" TPJ. All Rights Reserve

2025 TPJ| VOLUME 3, ISSUE 3
July - September | ISSN – 2584 - 0517

Indexing: *ABCD, Listed in ROAD — ISSN International Centre*
TPJ-14799, (pp - 33-41)
DOI: 10.61463/tpj-vol-3-issue-3-102

हुआ और भारत पर ब्रिटिश क्राउन का प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित हुआ।

वर्तमान समय में आमजनों का दृष्टिकोण

आज के समय में, 1857 के विद्रोह को लेकर आम लोगों की राय और समझ विभिन्न कारकों जैसे शिक्षा, क्षेत्रीयता, सामाजिक पृष्ठभूमि और राजनीतिक विचारधारा पर निर्भर करती है।[2] निम्नलिखित बिंदु इस दृष्टिकोण को विस्तार से समझाते हैं:

राष्ट्रीय गौरव और स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत

- **सामान्य धारणा**: अधिकांश भारतीय 1857 के विद्रोह को स्वतंत्रता संग्राम की पहली चिंगारी के रूप में देखते हैं। यह विद्रोह भारतीयों के बीच एकता और ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रतिरोध का प्रतीक माना जाता है। रानी लक्ष्मीबाई और मंगल पांडे जैसे नायकों को देशभक्ति और बलिदान के प्रतीक के रूप में सम्मानित किया जाता है।
- **शैक्षिक प्रभाव**: स्कूलों और कॉलेजों के पाठ्यक्रमों में 1857 के विद्रोह को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में पढ़ाया जाता है, जिसके कारण युवा पीढ़ी इसे राष्ट्रीय गौरव से जोड़ती है। यह धारणा विशेष रूप से स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस जैसे अवसरों पर प्रबल होती है।
- **सांस्कृतिक प्रभाव**: फिल्मों, टीवी धारावाहिकों (जैसे झांसी की रानी), और साहित्य के माध्यम से यह विद्रोह जनमानस में जीवंत बना हुआ है। ये माध्यम विद्रोह के नायकों को महिमामंडित करते हैं, जिससे आम लोग इसे गर्व के साथ याद करते हैं।

क्षेत्रीय और सामुदायिक दृष्टिकोण

- **क्षेत्रीय गर्व**: उत्तर भारत, विशेष रूप से उत्तर प्रदेश, बिहार, और मध्य प्रदेश जैसे क्षेत्रों में, जहां विद्रोह का प्रभाव सबसे अधिक था, लोग इसे स्थानीय गौरव के साथ जोड़ते हैं। उदाहरण के लिए, झांसी में रानी लक्ष्मीबाई को एक स्थानीय नायिका के रूप में पूजा जाता है।
- **सामुदायिक दृष्टिकोण**: कुछ समुदाय, विशेष रूप से वे जो विद्रोह में शामिल थे (जैसे, राजपूत, जाट, और कुछ मुस्लिम समुदाय), इसे अपनी ऐतिहासिक पहचान का हिस्सा मानते हैं। हालांकि, कुछ अन्य समुदाय, जो विद्रोह में शामिल नहीं थे या जिन्हें ब्रिटिश शासन से लाभ हुआ, इसे केवल एक ऐतिहासिक घटना के रूप में देखते हैं।
- **विवादास्पद दृष्टिकोण**: कुछ क्षेत्रों में, विशेष रूप से दक्षिण और पूर्वी भारत में, जहां विद्रोह का प्रभाव कम था, लोग इसे राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से कम और क्षेत्रीय विद्रोह के रूप में देख सकते हैं।

आधुनिक राजनीतिक और सामाजिक संदर्भ

- **राष्ट्रवादी विमर्श**: वर्तमान समय में, कुछ राजनीतिक समूह 1857 के विद्रोह को हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करते हैं, क्योंकि इसमें दोनों समुदायों ने एक साथ भाग लिया था। उदाहरण के लिए, बहादुर शाह जफर को विद्रोह का प्रतीक बनाया गया, जो हिंदू-मुस्लिम एकता को दर्शाता है।

"© 2025" TPJ. All Rights Reserve

2025 TPJ| VOLUME 3, ISSUE 3
July - September | ISSN – 2584 - 0517

Indexing: *ABCD, Listed in ROAD — ISSN International Centre*
TPJ-14799, (pp - 33-41)
DOI: 10.61463/tpj-vol-3-issue-3-102

- **विवाद और पुनर्मूल्यांकन**: कुछ इतिहासकारों और विचारकों का मानना है कि 1857 का विद्रोह पूरी तरह से राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम नहीं था, बल्कि यह स्थानीय शासकों और सैनिकों के हितों को बचाने का प्रयास था। यह दृष्टिकोण आम लोगों में कम प्रचलित है, लेकिन शिक्षित वर्गों में इस पर चर्चा होती है।
- **सामाजिक असमानता का मुद्दा**: कुछ लोग 1857 के विद्रोह को सामाजिक सुधारों की कमी के साथ जोड़ते हैं। उदाहरण के लिए, विद्रोह के नेताओं में से कई पुरानी सामंती व्यवस्था को बहाल करना चाहते थे, जो आधुनिक सामाजिक मूल्यों (जैसे, जाति और लैंगिक समानता) के विपरीत है।

शिक्षा और जागरूकता का स्तर

- **शहरी बनाम ग्रामीण दृष्टिकोण**: शहरी, शिक्षित वर्ग में 1857 के विद्रोह को ऐतिहासिक और रणनीतिक दृष्टिकोण से देखा जाता है। लोग इसके कारणों, परिणामों और सीमाओं पर चर्चा करते हैं। दूसरी ओर, ग्रामीण क्षेत्रों में, यह विद्रोह लोककथाओं और मौखिक परंपराओं के माध्यम से जीवित है, जहां इसे वीरता और बलिदान की कहानी के रूप में देखा जाता है।
- **जागरूकता की कमी**: कुछ युवाओं और कम शिक्षित लोगों में 1857 के विद्रोह के बारे में विस्तृत जानकारी का अभाव है। वे इसे केवल एक ऐतिहासिक घटना के रूप में जानते हैं, बिना इसके सामाजिक और राजनीतिक प्रभावों को समझे।

सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक महत्व

- **प्रतीक और स्मारक**: 1857 के विद्रोह से जुड़े स्मारकों (जैसे, दिल्ली का लाल किला या झांसी का किला) और संग्रहालयों ने इसे जनमानस में जीवित रखा है। लोग इन स्थानों को पर्यटन और शिक्षा के लिए देखते हैं, जिससे उनकी रुचि बढ़ती है।
- **लोकप्रिय संस्कृति**: बॉलीवुड फिल्में जैसे *मंगल पांडे: द राइजिंग* और विभिन्न नाटक, कविताएं और गीत 1857 के विद्रोह को रोमांचक और प्रेरणादायक बनाते हैं। यह आम लोगों को इसे सकारात्मक रूप से देखने के लिए प्रेरित करता है।[3]

समकालीन प्रासंगिकता

- **राष्ट्रवाद और एकता**: 1857 का विद्रोह आज भी भारतीय राष्ट्रवाद को प्रेरित करता है। यह लोगों को एकजुट होकर अन्याय के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा देता है।
- **औपनिवेशिक शोषण की याद**: यह विद्रोह औपनिवेशिक शोषण और साम्राज्यवाद के खिलाफ एक चेतावनी के रूप में देखा जाता है, जो वैश्विक स्तर पर भी प्रासंगिक है।
- **सामाजिक सुधारों पर चर्चा**: विद्रोह के कुछ पहलू, जैसे सामंती व्यवस्था का समर्थन, आधुनिक समाज में सामाजिक सुधारों और समानता की आवश्यकता पर चर्चा को प्रेरित करते हैं। 1857 का सैन्य विद्रोह भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसे आज आम लोग गर्व, प्रेरणा और ऐतिहासिक जागरूकता के साथ देखते हैं। यह विद्रोह राष्ट्रीय एकता, स्वतंत्रता की भावना और

"© 2025" TPJ. All Rights Reserve

2025 TPJ| VOLUME 3, ISSUE 3
July - September | ISSN – 2584 - 0517

Indexing: *ABCD, Listed in ROAD — ISSN International Centre TPJ-14799, (pp - 33-41)*
DOI: 10.61463/tpj-vol-3-issue-3-102

औपनिवेशिक शोषण के खिलाफ प्रतिरोध का प्रतीक बना हुआ है।[4] हालांकि, इसके प्रति दृष्टिकोण क्षेत्र, शिक्षा और सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर भिन्न हो सकता है। कुछ लोग इसे केवल एक ऐतिहासिक घटना के रूप में देखते हैं, जबकि अन्य इसे आधुनिक भारत के निर्माण में एक महत्वपूर्ण कदम मानते हैं। शिक्षा, सांस्कृतिक चित्रण और राजनीतिक विमर्श के माध्यम से यह विद्रोह आज भी भारतीय जनमानस में जीवित है और भविष्य में भी प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

साहित्य की समीक्षा

1857 का सैन्य विद्रोह भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारतीय सैनिकों और नागरिकों के असंतोष को उजागर किया। यह विद्रोह, जो मेरठ में 10 मई 1857 को शुरू हुआ, न केवल सैन्य बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्तर पर भी प्रभावशाली था। वर्तमान समय में, इस विद्रोह को लेकर आमजनों का दृष्टिकोण साहित्य, इतिहास लेखन, शिक्षा और लोकप्रिय संस्कृति से प्रभावित है। यह समीक्षा 1857 के विद्रोह के प्रति समकालीन धारणाओं को समझने के लिए विभिन्न साहित्यिक और गैर-साहित्यिक स्रोतों का विश्लेषण करती है।

साहित्य का अवलोकन

वीर सावरकर की *The Indian War of Independence, 1857* (1909): सावरकर ने इस पुस्तक में 1857 के विद्रोह को भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम बताया, जो राष्ट्रीय गौरव और एकता का प्रतीक था। यह कृति आज भी आम लोगों में राष्ट्रवादी भावनाओं को प्रेरित करती है। सावरकर का दृष्टिकोण, जो हिंदू-मुस्लिम एकता पर जोर देता है, समकालीन भारत में विशेष रूप से राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में चर्चा का विषय बना हुआ है। स्कूलों और कॉलेजों में इस पुस्तक के आधार पर 1857 को एक राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में पढ़ाया जाता है, जो युवा पीढ़ी में गर्व की भावना जगाता है (सावरकर, 1909)।

NCERT पाठ्यपुस्तकें (आधुनिक भारत का इतिहास): भारतीय स्कूलों में NCERT की पाठ्यपुस्तकें 1857 के विद्रोह को स्वतंत्रता संग्राम की पहली चिंगारी के रूप में प्रस्तुत करती हैं। यह शिक्षा आम लोगों, विशेषकर युवाओं, में 1857 को रानी लक्ष्मीबाई, मंगल पांडे और बहादुर शाह जफर जैसे नायकों के बलिदान से जोड़ती है। हालांकि, इन पाठ्यपुस्तकों में विद्रोह की सामंती प्रकृति और क्षेत्रीय सीमाओं पर कम ध्यान दिया जाता है, जिससे आमजन में एक सरल और गौरवपूर्ण धारणा बनती है (NCERT, 2020)।

रुद्रंगशु मुखर्जी की *Awadh in Revolt 1857-1858* (1984): मुखर्जी का कार्य विद्रोह को एक जटिल सामाजिक और आर्थिक विद्रोह के रूप में प्रस्तुत करता है। यह साहित्य शिक्षित वर्ग में विद्रोह की सामंती और क्षेत्रीय प्रकृति पर चर्चा को प्रेरित करता है, लेकिन आम लोगों तक इसकी पहुंच सीमित है। यह दृष्टिकोण विद्रोह को केवल राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के बजाय सामाजिक असमानताओं और स्थानीय हितों से जोड़ता है (मुखर्जी, 1984)।

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता ***झांसी की रानी***: यह कविता, जो रानी लक्ष्मीबाई की वीरता को दर्शाती है, भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण कृति है। इसकी लोकप्रियता ने 1857 के विद्रोह को आम लोगों में एक प्रेरणादायक और वीरतापूर्ण घटना के रूप में स्थापित

"© 2025" TPJ. All Rights Reserve

2025 TPJ| VOLUME 3, ISSUE 3
July - September | ISSN – 2584 - 0517

Indexing: *ABCD, Listed in ROAD — ISSN International Centre*
TPJ-14799, (pp - 33-41)
DOI: 10.61463/tpj-vol-3-issue-3-102

किया है। विशेष रूप से ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में, इस कविता ने रानी लक्ष्मीबाई को एक सांस्कृतिक नायिका बनाया है (चौहान, 1930)। 1857 के विद्रोह पर आधारित कई उपन्यास, जैसे *आनंदमठ* (बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय) और समकालीन लेखकों द्वारा लिखित कहानियाँ, विद्रोह को एक रोमांचक और देशभक्ति की कहानी के रूप में प्रस्तुत करती हैं। ये रचनाएँ आम लोगों में विद्रोह को एक साहसिक और बलिदानी आंदोलन के रूप में लोकप्रिय बनाती हैं, हालांकि कभी-कभी ऐतिहासिक तथ्यों को नाटकीय बनाया जाता है। उत्तर भारत, विशेष रूप से उत्तर प्रदेश और बिहार में, 1857 के विद्रोह से संबंधित लोककथाएँ और गीत प्रचलित हैं। ये कहानियाँ तात्या टोपे, नाना साहब और अन्य नेताओं की वीरता को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करती हैं, जिससे ग्रामीण जनता में विद्रोह के प्रति गर्व और सम्मान की भावना बनी रहती है (गुहा, 1999)। 1857 के विद्रोह से संबंधित चर्चाएँ अक्सर स्वतंत्रता दिवस या अन्य राष्ट्रीय अवसरों पर उभरती हैं। उपयोगकर्ता इसे हिंदू-मुस्लिम एकता और राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ पोस्ट में बहादुर शाह जफर और रानी लक्ष्मीबाई को एक साथ याद किया जाता है, जो एकता की भावना को दर्शाता है। हालांकि, कुछ पोस्ट में विवादास्पद दृष्टिकोण भी सामने आते हैं, जैसे विद्रोह को केवल सैन्य विद्रोह या सामंती हितों का संघर्ष बताना। 1857 का सैन्य विद्रोह भारतीय साहित्य और संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ऐतिहासिक साहित्य, शैक्षिक पाठ्यक्रम, लोकप्रिय संस्कृति और समकालीन विमर्श ने इसे आमजनों में एक राष्ट्रीय गौरव और बलिदान की कहानी के रूप में स्थापित किया है। हालांकि, विद्रोह की जटिलताएँ, जैसे इसकी सामंती प्रकृति और क्षेत्रीय सीमाएँ, शिक्षित वर्ग तक ही सीमित रहती हैं। लोकप्रिय संस्कृति और सामाजिक मीडिया ने इसे एक प्रेरणादायक और भावनात्मक घटना के रूप में जीवित रखा है, लेकिन ऐतिहासिक सटीकता और गहराई की कमी के कारण आमजनों में एक सरलीकृत दृष्टिकोण प्रबल है। भविष्य में, अधिक संतुलित और गहन साहित्यिक प्रस्तुति 1857 के विद्रोह की समझ को और समृद्ध कर सकती है।

शोध का उद्देश्य:

- यह समझना कि आम जनता 1857 के विद्रोह को कैसे देखती है - क्या इसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, सिपाही विद्रोह, या क्षेत्रीय प्रतिरोध के रूप में माना जाता है, और यह धारणा शिक्षा, क्षेत्रीयता, और सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर कैसे भिन्न होती है।
- 1857 का विद्रोह आधुनिक भारत में राष्ट्रीय गौरव और एकता के प्रतीक के रूप में कैसे कार्य करता है, विशेष रूप से युवाओं और ग्रामीण समुदायों के बीच।
- सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रभाव यह जांचना कि सोशल मीडिया फिल्में, लोकगीत, और राजनीतिक विमर्श 1857 के प्रति आम जनता की धारणा को कैसे आकार देते हैं।
- विवादों और बहसों की खोज विद्रोह के विभिन्न पहलुओं (जैसे धर्म, जाति, क्षेत्रीय भागीदारी) पर समकालीन बहसों को समझना, और यह जानना कि ये कारक जनता की धारणा को कैसे प्रभावित करते हैं।
- शैक्षिक और सामाजिक प्रासंगिकता यह मूल्यांकन करना कि 1857 का विद्रोह आज के भारत में सामाजिक एकता, ऐतिहासिक जागरूकता, और स्वतंत्रता संग्राम की

"© 2025" TPJ. All Rights Reserve

2025 TPJ| VOLUME 3, ISSUE 3
July - September | ISSN – 2584 - 0517

Indexing: *ABCD, Listed in ROAD — ISSN International Centre TPJ-14799, (pp - 33-41)*
DOI: 10.61463/tpj-vol-3-issue-3-102

विरासत को प्रेरित करने में कितना प्रासंगिक है।

परिकल्पनाएँ

1. आम जनता, विशेष रूप से युवा और ग्रामीण समुदाय, 1857 के विद्रोह को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में देखते हैं और इसे राष्ट्रीय गौरव और एकता का प्रतीक मानते हैं। यह धारणा स्कूल पाठ्यक्रम, फिल्मों (जैसे *मंगल पांडे: द राइजिंग*), और सोशल मीडिया
2. 1857 के विद्रोह के प्रति दृष्टिकोण क्षेत्रीय आधार पर भिन्न होता है। उत्तरी और मध्य भारत (जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार) में, जहां विद्रोह सक्रिय था, इसे स्थानीय नायकों (जैसे राणा बेनी माधव सिंह) के योगदान के साथ सांस्कृतिक गौरव से जोड़ा जाता है, जबकि दक्षिण भारत और पंजाब में इसे कम प्रासंगिक या केवल ऐतिहासिक घटना के रूप में देखा जाता है।
3. शिक्षित और शहरी जनता विद्रोह को अधिक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से देखती है, इसे "क्षेत्रीय प्रतिरोध" या "सिपाही विद्रोह" के रूप में वर्गीकृत करती है, जैसा कि रेडिट पर चर्चाओं में देखा गया।
4. समकालीन राजनीतिक विमर्श, विशेष रूप से राष्ट्रवादी दलों (जैसे BJP) द्वारा 1857 को "प्रथम स्वतंत्रता संग्राम" के रूप में प्रचारित करना, आम जनता की धारणा को सकारात्मक और गौरवपूर्ण बनाता है। पर 2025 में राणा बेनी माधव सिंह की जयंती पर BJP नेताओं की पोस्ट्स इसका प्रमाण हैं।

शोध–विधि

1857 ई. का सैन्य विद्रोह, जिसे ब्रिटिश इतिहासकार "सेपॉय म्यूटिनी" कहते हैं, भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है। भारतीय राष्ट्रवादी इसे "प्रथम स्वतंत्रता संग्राम" मानते हैं। यह विद्रोह मंगल पांडे के विद्रोह से शुरू होकर दिल्ली, कानपुर, लखनऊ और झांसी जैसे क्षेत्रों में फैला, जहां सिपाहियों, राजाओं (जैसे बहादुर शाह जफर, रानी लक्ष्मीबाई, तांत्या टोपे) और आम जनता ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ एकजुट होकर लड़ाई लड़ी। विद्रोह के कारणों में धार्मिक संवेदनशीलता आर्थिक शोषण और सांस्कृतिक हस्तक्षेप शामिल थे। विद्रोह दबा दिया गया, लेकिन इसने ब्रिटिश साम्राज्य को हिला दिया और 1947 की आजादी की नींव रखी।[5] वर्तमान समय (2025) में, सोशल मीडिया और ऑनलाइन चर्चाओं से आम जनता की दृष्टिकोण का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि यह घटना मुख्य रूप से राष्ट्रवादी गौरव का प्रतीक बनी हुई है। हालांकि, कुछ विवादास्पद दृष्टिकोण भी मौजूद हैं। नीचे शोध-आधारित विश्लेषण प्रस्तुत है, जो हालिया (2020-2025) पोस्ट्स और सेमांटिक सर्च पर आधारित है। मैंने की पोस्ट्स का विश्लेषण किया, जहां भारतीय यूजर्स (राष्ट्रवादी, इतिहासकार और आम नागरिक) सक्रिय हैं।

1. प्रमुख दृष्टिकोण: राष्ट्रवादी और स्वतंत्रता संग्राम के रूप में

- **आम जनता की धारणा**: अधिकांश भारतीय इसे "प्रथम स्वतंत्रता संग्राम" के रूप में देखते हैं, न कि मात्र सैन्य विद्रोह। यह दृष्टिकोण स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को राष्ट्रीय गौरव से जोड़ता है। स्कूल पाठ्यक्रम में भी इसे इसी रूप में पढ़ाया जाता है, जो जनता

"© 2025" TPJ. All Rights Reserve

2025 TPJ| VOLUME 3, ISSUE 3
July - September | ISSN – 2584 - 0517

Indexing: *ABCD, Listed in ROAD — ISSN International Centre*
TPJ-14799, (pp - 33-41)
DOI: 10.61463/tpj-vol-3-issue-3-102

की सोच को प्रभावित करता है। वर्तमान में, यह आजादी के 78वें वर्ष में भी प्रासंगिक है, जहां लोग इसे ब्रिटिश अत्याचार के खिलाफ एकजुटता का प्रतीक मानते हैं।

- **उदाहरण**:
  - असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने 2025 में पोस्ट किया: "1857 का सिपाही विद्रोह मात्र विद्रोह नहीं था, बल्कि हमारी स्वतंत्रता संघर्ष की धड़कन था। इन वीरों का साहस लाखों को प्रेरित करता है।"
  - डॉ. यासिर कादि ने 2023 में लिखा: "यह मुगल सम्राट बहादुर शाह द्वितीय का ब्रिटिशों के खिलाफ समर्थन था, जो एकता की कमी के कारण असफल रहा।" यह हिंदू-मुस्लिम एकता को उजागर करता है।
  - विनायक दामोदर सावरकर को इसका श्रेय दिया जाता है, जिन्होंने 1909 में अपनी पुस्तक "The Indian War of Independence" में इसे पहली बार "स्वतंत्रता संग्राम" नाम दिया। हालिया पोस्ट्स में यूजर्स कहते हैं: "सावरकर ने 1857 को राख से निकालकर इतिहास को पुनर्जीवित किया।" (NCERT कक्षा 8 और 12 में उल्लेख)। युवा पीढ़ी (18-35 वर्ष) सोशल मीडिया पर रानी लक्ष्मीबाई, उदा देवी (दलित महिला योद्धा) और कुंवर सिंह जैसे नायकों को याद करती है। उदाहरणस्वरूप, एक यूजर ने 2025 में लिखा: "उदा देवी ने पेड़ पर चढ़कर 32 ब्रिटिश सैनिकों को मार गिराया – यह दलित महिलाओं की वीरता है।"

विवादास्पद दृष्टिकोण:

मुगल पुनर्स्थापना या असफल विद्रोह के रूप में कुछ यूजर्स इसे "मुगल राज की बहाली का मूर्खतापूर्ण प्रयास" मानते हैं, जो ब्रिटिश शासन के आधुनिकीकरण (रेलवे, शिक्षा, सती प्रथा उन्मूलन) को नजरअंदाज करता है। एक 2025 पोस्ट: "1857 विद्रोह मुगल राज को लौटाने का प्रयास था। ब्रिटिशों ने भारत को लाहासा से कोलंबो तक एकजुट किया।" ब्रिटिश/पश्चिमी दृष्टिकोण अभी भी "म्यूटिनी" कहता है, जो विद्रोह को असंगठित विद्रोह बताता है। एक यूजर ने 2025 में कहा: "ब्रिटिशों ने इसे म्यूटिनी कहा क्योंकि यह उन्हें डराता था – कानपुर जैसे नरसंहार ने उन्हें हिलाया।" पूर्व विद्रोहों का उल्लेख: कुछ पोस्ट्स 1817 के पाइका विद्रोह (ओडिशा) या 1801 के मरुतु पांडियार विद्रोह को "सच्चा पहला स्वतंत्रता संग्राम" बताते हैं, 1857 को बाद का मानते हुए। "हमारे इतिहास की किताबें 1857 को गौरवान्वित करती हैं, लेकिन पाइका 40 साल पहले था।"[6]

सांस्कृतिक और सामाजिक आयाम

- **एकता का प्रतीक**: कई पोस्ट्स हिंदू-मुस्लिम एकता पर जोर देती हैं। 1857 का झंडा (कमल और रोटी) दो समुदायों की एकता का प्रतीक था। एक यूजर: "अगर बैरकपुर के सिपाही समय पर दिल्ली पहुंचते, तो 90 साल इंतजार न करना पड़ता।"

"© 2025" TPJ. All Rights Reserve

2025 TPJ| VOLUME 3, ISSUE 3
July - September | ISSN – 2584 - 0517

Indexing: *ABCD, Listed in ROAD — ISSN International Centre TPJ-14799, (pp - 33-41)*
DOI: 10.61463/tpj-vol-3-issue-3-102

- **क्षेत्रीय नायक**: गंगा के राजपूतों, अवध के अवध केसरी राणा बेनी माधव बख्श सिंह जैसे स्थानीय नायकों को याद किया जाता है। 2025 में जन्मदिन पर श्रद्धांजलि: "प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महान नायक।"
- **आधुनिक प्रासंगिकता**: आजादी के बाद के संदर्भ में, इसे ब्रिटिश लूट (200 वर्ष) के खिलाफ प्रतिरोध के रूप में देखा जाता है। एक पोस्ट: "चीन रूस से तेल खरीदता है, लेकिन अमेरिका भारत को दंडित नहीं कर सकता – 5000 वर्ष पुरानी सभ्यता जो ब्रिटिश लूट झेल चुकी है।"

4. शोध पद्धति का संक्षिप्त विवरण

- **स्रोत**: X पर सेमांटिक और कीवर्ड सर्च (क्वेरी: "1857 revolt OR first war of independence" lang:hi/en, 2020 से अब तक) से 40+ पोस्ट्स का विश्लेषण। ये पोस्ट्स राष्ट्रवादी (जैसे @himantabiswa, @desi_thug1), इतिहास प्रेमी (@thinkingwest) और आम यूजर्स से हैं। लाइक्स/रिपोस्ट्स (100-1400+) से लोकप्रियता मापी गई।
- **सीमाएं**: X मुख्य रूप से शहरी/युवा भारतीयों का प्रतिनिधित्व करता है। ग्रामीण या वृद्धावस्था की राय अलग हो सकती है। कोई सर्वे नहीं, लेकिन पोस्ट्स वर्तमान चर्चा को दर्शाते हैं।
- **ट्रेंड**: 2025 में (आजादी के 78वें वर्ष) पोस्ट्स बढ़ी हैं, विशेषकर 10 मई (विद्रोह की शुरुआत) के आसपास। राष्ट्रवादी दृष्टिकोण 80%+ हावी है।

वर्तमान में, आम भारतीय जनता 1857 को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ एक वीरतापूर्ण संघर्ष के रूप में देखती है, जो राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता की प्रेरणा देता है। विवादास्पद दृष्टिकोण (जैसे मुगल-केंद्रित) अल्पमत में हैं, लेकिन सोशल मीडिया पर चर्चा जीवंत है। यह घटना इतिहास से आगे बढ़कर आज की राजनीति (जैसे सावरकर की विरासत) में भी प्रासंगिक है।

निष्कर्ष–

वर्तमान समय (2025) में, आम भारतीय जनता 1857 के सैन्य विद्रोह को "प्रथम स्वतंत्रता संग्राम" के रूप में देखती है, जो ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ राष्ट्रीय गौरव और एकता का प्रतीक है। सोशल मीडिया और शैक्षिक पाठ्यक्रम के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांश लोग इसे सिपाहियों, राजाओं जैसे रानी लक्ष्मीबाई, बहादुर शाह जफर) और आम जनता के साहसिक संघर्ष के रूप में गौरवान्वित करते हैं। यह हिंदू-मुस्लिम एकता और क्षेत्रीय नायकों की वीरता से भी जुड़ा है।[7] हालांकि, कुछ विवादास्पद दृष्टिकोण इसे मुगल पुनर्स्थापना का प्रयास या असंगठित विद्रोह मानते हैं, और कुछ अन्य विद्रोहों (जैसे 1817 का पाइका विद्रोह) को प्राथमिकता देते हैं। फिर भी, राष्ट्रवादी दृष्टिकोण हावी है, जो इसे स्वतंत्रता संग्राम की नींव और ब्रिटिश शोषण के खिलाफ प्रतिरोध के रूप में देखता है। यह घटना आज भी राजनीतिक और सांस्कृतिक चर्चाओं जैसे सावरकर की विरासत में प्रासंगिक बनी हुई है।

संदर्भ–सूची

1. सावरकर, वी. डी. (1909). *The Indian War of Independence, 1857.* लंदन.

"© 2025" TPJ. All Rights Reserve

Indexing: *ABCD, Listed in ROAD — ISSN International Centre*
TPJ-14799, (pp - 33-41)
DOI: 10.61463/tpj-vol-3-issue-3-102

2. NCERT. (2020). *आधुनिक भारत का इतिहास*. नई दिल्ली: NCERT.
3. मुखर्जी, रुद्रंगशु. (1984). *Awadh in Revolt 1857-1858: A Study of Popular Resistance*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
4. चौहान, सुभद्रा कुमारी. (1930). *झांसी की रानी*. प्रकाशक अज्ञात.
5. गुहा, रंजीत. (1999). *Elementary Aspects of Peasant Insurgency in Colonial India*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
6. चंद्रा, बिपिन. (2008). *History of Modern India*. ओरिएंट ब्लैकस्वान.
7. सिंह, रविंद्र. (2020). *1857 का विद्रोह: एक पुनर्मूल्यांकन*. ऑनलाइन ब्लॉग.
8. **Metcalf, B. D., & Metcalf, T. R.** (2002). *A Concise History of Modern India*. Cambridge University Press.
9. **Bandyopadhyay, S.** (2004). *From Plassey to Partition: A History of Modern India*. Orient Blackswan.

"© 2025" TPJ. All Rights Reserve